

## वर्साय की सन्धि -3

वर्साय की संधि का कार्यान्वयन

वर्साय की संधि एक अत्यंत महत्वपूर्ण समझौता था। इस पर प्रथम विश्व युद्ध के अंत में 1919 में हस्ताक्षर किए गए थे। यह संधि मुख्य रूप से युद्ध शुरू करने के लिए जर्मनी को दंडित करने के बारे में थी। इस संधि से तीन बड़ी बातें हुईं.

क्षतिपूर्ति

क्षतिपूर्ति का मतलब था कि जर्मनी को अन्य देशों को पैसा देना होगा। ये वो देश थे जिन्होंने युद्ध जीता था.

विचार यह था कि चूंकि जर्मनी ने युद्ध शुरू किया था, इसलिए उन्हें नुकसान की भरपाई करनी चाहिए।

जर्मनी को भुगतान की जाने वाली कुल राशि बहुत बड़ी थी। यह 132 बिलियन स्वर्ण अंक था। यह आज के लगभग 269 बिलियन अमेरिकी डॉलर के बराबर है।

यह पैसा चुकाना जर्मनी के लिए बहुत कठिन था। युद्ध के कारण वे पहले से ही गरीब थे। इससे उनकी अर्थव्यवस्था और भी खराब हो गयी.

प्रादेशिक परिवर्तन

क्षेत्रीय परिवर्तनों का मतलब है कि यूरोप का नक्शा फिर से तैयार किया गया। जर्मनी को अपनी कुछ भूमि छोड़नी पड़ी।

इस भूमि का कुछ भाग पोलैंड नामक नये देश को चला गया। इसमें "पोलिश कॉरिडोर" नामक स्थान भी शामिल था। इससे पोलैंड को समुद्र तक पहुंच मिल गई।

जर्मनी ने बेल्जियम, डेनमार्क और फ्रांस जैसे अन्य देशों से भी अपनी ज़मीन खो दी। इससे जर्मनी छोटा हो गया।

ज़मीन खोने का मतलब यह भी था कि जर्मनी ने लोगों को खो दिया। बहुत से जर्मन अब दूसरे देशों में रहते थे। इससे जर्मन बहुत दुखी हुए।

राइनलैंड व्यवसाय

राइनलैंड पश्चिमी जर्मनी का एक क्षेत्र है। यह फ्रांस और बेल्जियम के बाद है।

संधि में कहा गया कि मित्र राष्ट्र इस क्षेत्र को नियंत्रित करेंगे। युद्ध जीतने वाले देश मित्र राष्ट्र थे।

इस कब्जे का उद्देश्य जर्मनी को कमजोर बनाये रखना था। यदि जर्मनी दोबारा आक्रमण करने का प्रयास करता तो मित्र राष्ट्र उन्हें शीघ्र ही रोक सकते थे।

राइनलैंड पर कब्ज़ा 1930 तक चला। जर्मनी को वहां कोई सैनिक रखने की अनुमति नहीं थी।

यह जर्मनी में भी बहुत अलोकप्रिय था। कई जर्मनों को लगा कि यह अनुचित था।

वर्साय की संधि का उद्देश्य यूरोप में शांति बनाए रखना था। हालाँकि, इससे कई जर्मन बहुत क्रोधित हुए। कुछ लोग कहते हैं कि इससे द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने में मदद मिली। संधि विवादास्पद थी और इसके कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ थीं।